प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 04 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत आज से प्रारम्भ सप्तदिवसीय पुण्यतिथि समारोह के सम्मेलन में **'भारत की सनातन संस्कृति में राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद'** विषय पर बोलते हुए **गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज**, मा0 मुख्यमंत्री, उ0प्र0 ने कहा कि राष्ट्र का आधार संस्कृति है। राष्ट्र की आत्मा संस्कृति। हिमालय से समुंद्रपर्यत्न भारत भूमि में हजारों वर्षों की विकसित संस्कृति ने भारत को राष्ट्र बनाया। पंथ या मजहब राष्ट्र का आधार नही हो सकता। यदि ऐसा होता तो सन् 1947 में बना पाकिस्तान पुनः 1971 में दो टुकड़ों में न बट जाता। यूरोप के छोटे–छोटे देश भी यही प्रमाणित करते है। भारत की राजनीतिक सीमाएं सदैव परिवर्तित रही किन्तु सांस्कृतिक सीमा अक्षुण्य है। उन्होंने आगे कहा कि भारत राष्ट्र का निर्माण नेता नहीं ऋषियों ने किया है। यह त्रषि निर्मित राष्ट्र है। राष्ट्र का अधिष्ठान धर्म एवं संस्कृति है, राष्ट्र न तो मात्र भूखण्ड का नाम है, न तो यह कोई राजनीतिक इकाई है अपितु यह एक सांस्कृतिक इकाई का नाम है। राष्ट्र का निर्माण हजारों वर्षों के जीवन–मूल्य, परम्परा और संस्कृति के निर्माण से होता है। वैदिक युग से ही हम राष्ट्र की अवधारणा का विकास कर चुके थे। पश्चिम की नेशन–स्टेट अवधारणा से बिल्कुल अलग राष्ट्र की भारतीय अवधारणा है। एकजन–एक संस्कृति से बना राष्ट्र उपासना, खान–पान, भाषा–बोली की विविधाओं में एकता के सूत्र में बधा होता है। भारतीय राष्ट्र और उसकी अवधारणा अरस्तु के दर्शन से नहीं समझा जा सकता। इसे समझने के लिए कौटिल्य कर दर्शन एवं पं0 दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन समझना पड़ेगा। इसीलिए भारत का धर्म ही राष्ट्रधर्म है। सांस्कृतिक एकता हमारी पहचान है। केरल से निकला एक सन्यासी एसी अवधारणा से सांस्कृतिक भारत की सीमाओं पर चारधाम की स्थापना करता है। द्वादश ज्योर्तिलिंग, एक्यावन शक्तिपीठ हमारे इसी राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं।

मुख्य वक्ता अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री सुनील अम्बेकर** जी कहा कि विविधता में एकता की अनुभूति से भारत की राष्ट्रीयता पनपी है। हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विकास यात्रा ने भारत को राष्ट्र बनाया, इसीलिए भारत एक सांस्कृतिक–आध्यात्मिक राष्ट्र है। अलग–अलग दिखने में एकत्व की अनुभूति ही राष्ट्रीयता की पहचान है। भारत की सीमा पर सेना भारत की सीमाओं की रक्षा करती है तो दूसरी तरफ सामाजिक जीवन में सन्तो, ऋषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को जीवन्त बनाये रखा है। आज हमारा प्रमुख कर्तव्य है कि हम भारत की राष्ट्रीयता अर्थात् सांस्कृतिक एकता के प्रतीकों से भावी पीढ़ी को परिचित करायें। भारत को महाशक्ति के साथ–साथ महान राष्ट्र भी बनना है और महान राष्ट्र बनने का पाथेय भारत की संस्कृति ही है। भारत की राष्ट्रीयता वेद, उपनिषद, आरण्यक, रामायण, महाभारत जैसे उन महान ग्रन्थों में व्याख्यापित है जो भारत की संस्कृति एवं परम्परा के साक्षी है। दुनियां को सांस्कृतिक चेतना का साफ्टवेयर भारत ही दे सकता है। सौभाग्य से यह पीठ ज्ञान के मार्गदर्शन की पीठ है। राष्ट्र–राष्ट्रीयता को सामाजिक जीवन तक पहुॅचाने की पीठ है। महन्त दिग्विजयनाथ जी एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्म को राष्ट्रीयता को पर्याय बनाया। राष्ट्रधर्म ही उनका धर्म था। अतः इस मंच से राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का उक्त स्वर निश्चित ही परिणामकारी होगा।

मुख्य अतिथि हरिद्वार से पधारे **जगद्गुरू रामानन्दाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज ने कहा कि** भारतीय राष्ट्र को समझने के लिए भारतीय संस्कृति की अनवरत विकसित धारा को समझना पड़ेगा। राष्ट्र की अपनी विशिष्ट पहचान होती है, उसका अपना व्यक्तित्व होता है, उसकी अपनी विशिष्टताएं होती हैं। भारत राष्ट्र की भी अपनी पहचान है, अपनी परम्परा है, अपनी संस्कृति है, अपना विशिष्ट जीवन मूल्य है।

उन्होंने आगे कहा कि आजाद भारत में राष्ट्र की भारतीय अवधारणा को जानबूझकर बिगाड़ा गया। सेकुलर बनाम हिन्दुत्व की अनावश्यक बहस चलायी गयी। जबकि हिन्दुत्त्व ही राष्ट्रीयता है। हिन्दुत्त्व एवं राष्ट्रीयता में कोई विभेद नही। भारत की पहचान ही भारत की राष्ट्रीयता है। भारत की पहचान वेदों से है, उपनिषदों से है, पुराणों से है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, महायोगी शिव से है। राम–कृष्ण–शिव भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं।

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल 05 सितम्बर,2017 को प्रातः 10.30 बजे **'संस्कृति एवं संस्कृत सम्मेलन'।** अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा' का आयोजन।**

पटना से पधारे भारत साधु समाज के महामंत्री **स्वामी हरिनारायणानन्द जी महाराज** ने कहा कि राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की सही अवधारणा आजाद भारत के तथाकथित सेकुलरिस्टों एवं बुद्विजीवियों ने सामने ही नहीं आने दिया। शिक्षण संस्थान यह पढाती रहीं है कि कारवाँ आता गया और भारत बसता गया। वे पढ़ाती रही कि भारत को राष्ट्र ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने बनाया। जान–बूझकर भारतीय राष्ट्र की अवधारणा एवं अवधारणा एवं राष्ट्रीयता को विकृत किया गया। आज आवश्यकता है कि हम भारत को जाने, भारतीय संस्कृति को जाने, भारतीय राष्ट्र को जाने, अपनी राष्ट्रीयता को जाने और गौरवशाली भारतीय राष्ट्र के पुनर्निर्माण के अभियान का अंग बने।

उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उत्तर प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति **प्रो0 रामअचल सिंह** ने कहा कि भारत भू–सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। मातृभूमि के प्रति श्रद्धा हमारी जीवन पद्धति है। राष्ट्र एक शरीर है और संस्कृति उस राष्ट्र रूपी शरीर की आत्मा। भारत माता आज अपने वैभव के शिखर पर बैठने हेतु बढ़ रही है। राष्ट्रवादी अभियान अपनी तीव्रता के साथ आगे बढ़ रहा है। देश का युवा अपनी पूरी समझदारी, तर्क एवं आध्यात्य शक्ति के साथ राष्ट्रवाद की प्रखर धारा का हिस्सा बने। इक्कीसवीं शताब्दी भारत की है।

अतिथियों का स्वागत एवं प्रस्ताविकी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति **प्रो. उदय प्रताप सिंह** जी ने किया। वैदिक मंगलाचरण श्री रंगनाथ त्रिपाठी, गोरक्षाष्टक पाठ श्री पुनीस कुमार पाण्डेय एंव श्री प्रियांशु चौबे प्रस्तुत किया। संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर दुधेश्वरनाथ महादेव मन्दिर, गाजियाबाद से पधारे **महन्त नारायण गिरि जी महाराज**, कालका, नई दिल्ली से पधारे **महन्त सुरेन्द्रनाथ जी महाराज,** दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या से पधारे **महन्त सुरेशदास जी महाराज,** कटक उड़ीसा से पधारे **महन्त शिवनाथ जी,** श्री बड़ेभक्तमाल अयोध्याधाम से पधारे **श्री अवधेशदास जी महाराज,** देवीपाटन मन्दिर, तुलसीपुर से पधारे महन्त मिथलेशनाथ जी, कालीबाड़ी, गोरखपुर के **महन्त श्री रवीन्द्रदास जी महाराज,** श्री हनुमान मन्दिर गोरखनाथ के **महन्त श्री प्रेमदास जी महाराज,** अयोध्या से पधारे **महन्त राममिलनदास** जी, चचाईमठ के **महन्त पंचाननपुरी** जी सहित बड़ी संख्या में देशभर से आये संत–महात्मा एंव महानगर के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।